Anusandhanvallari
Vol 2024, No.1
June 2024
ISSN 2229-3388

''मगध मण्डल के शासकीय एवं अशासकीय प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानो में अध्ययनरत् छात्राध्यापक की शिक्षण संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन''

डॉ० अषोक कुमार शर्मा

प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, निम्स विश्वविद्यालय जयपुर

अमित कुमार

पीएच.डी (शोधार्थी)

शोध सारांश :–

नई शिक्षा नीति के अन्तर्गत विभिन्न क्षेत्रों में कदम उठाए गए है। उनमें से अध्यापकों की जवाबदेही विषय भी विचारणीय है। और आज के बदले हुए परिवेश में इस विषय पर विचार करना अनिवार्य है। भारत सरकार ने सर्वप्रथम विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग का गठन स्वतन्त्र भारत की नवीन आवश्यकताओं एवं माँगों के अनुकूल शिक्षा के पुर्नगठन हेतु उपयुक्त सुझाव देने के लिए किया। इस आयोग ने शिक्षकों के दायित्वों के सम्बन्ध में कोई चर्चा नहीं की। राष्ट्रीय शिक्षा आयोग ने प्रथम बार "शिक्षकों के दायित्वों" के सन्दर्भ में आचरण एवं अनुशासन सम्बन्धी नियमों की चर्चा की। इस आयोग ने विश्वविद्यालय की स्वायत्तता की बात की थी। स्वायत्तता से तात्पर्य यह था कि विश्वविद्यालयों को शिक्षकों की नियुक्ति, पदोन्नति, छात्रों के प्रवेश, पाठ्यक्रम निर्धारण तथा परीक्षाओं के लिए स्वतन्त्रता प्रदान की जाये। जिससे वे उच्च शिक्षा के स्तर को ऊँचा उठाने में सक्षम हो। अध्यापक षिक्षा एक निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया होने के कारण उसे लचीलापन, मानवीय एवं अन्तः अनुषासन की आवष्यकता है।

संकेताक्षर : विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग अध्यापकों की जवाबदेही "शिक्षकों के दायित्व पाठ्यक्रम अध्यापक षिक्षा

प्रस्तावना :–

षिक्षक का समाज में अति सम्मान जनक एवं महत्वपूर्ण स्थान है, वह एक पीढी से दूसरी पीढी को बौद्धिक परम्पराएं तथा तकनीकी कौषल पहुँचाने का केन्द्र है तथा साथ ही सभ्यता एवं संस्कृति के प्रकाषन को

बनाये रखने में सहायक है अध्यापक भी जीवन पर्यन्त षिक्षार्थी बना रहे तभी वह सच्चा षिक्षक बन सकता है अध्यापक कभी भी वास्तविक अर्थो में नही पढा सकता, जब तक वह स्वयं भी सीख नही रहा है।

शिक्षा के द्वारा ही किसी भी राष्ट्र के भविष्य का निर्माण होता है तथा शिक्षा मनुष्य के जीवन का महत्त्वपूर्ण चरण होता है। शिक्षा एक उद्देश्य पूर्ण प्रक्रिया है जिसका सामान्य सा उद्देश्य व्यक्ति को उसकी अन्तर्निहित शक्तियों का ज्ञान करना है। ''शिक्षा व्यक्ति की उन सभी भीतरी शक्तियों का विकास है जिससे वह अपने वातावरण पर नियंत्रण रखकर अपने उत्तरदायित्वों का निर्वाह कर सके।'' शिक्षा के द्वारा ही व्यक्ति वातावरण के साथ समायोजन स्थापित करता है। शिक्षा के क्षेत्र में अनेक बदलाव आ रहे हैं ज्ञान की कक्षाओं का विकास व विस्तार हो रहा है। ज्ञान की नई–नई संकल्पनाओं का उद्‌गम हो रहा है। शिक्षा को प्रभावित करने वाले कारणों को पहचाना जा रहा है। शिक्षा व्यक्ति का सर्वांगीण विकास करने का प्रमुख साधन है। सर्वांगीण विकास से तात्पर्य व्यक्ति की बौद्धिक व सांवेगिक समझ से है जिसके द्वारा व्यक्ति अपने जीवन में सामंजस्य स्थापित करता है।

नई शिक्षा नीति के अन्तर्गत विभिन्न क्षेत्रों में कदम उठाए गए है। उनमें से अध्यापकों की जवाबदेही विषय भी विचारणीय है। और आज के बदले हुए परिवेश में इस विषय पर विचार करना अनिवार्य है। भारत सरकार ने सर्वप्रथम विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग का गठन स्वतन्त्र भारत की नवीन आवश्यकताओं एवं माँगों के अनुकूल शिक्षा के पुर्नगठन हेतु उपयुक्त सुझाव देने के लिए किया। इस आयोग ने शिक्षकों के दायित्वों के सम्बन्ध में कोई चर्चा नहीं की। राष्ट्रीय शिक्षा आयोग ने प्रथम बार "शिक्षकों के दायित्वों" के सन्दर्भ में आचरण एवं अनुशासन सम्बन्धी नियमों की चर्चा की। इस आयोग ने विश्वविद्यालय की स्वायत्तता की बात की थी। स्वायत्तता से तात्पर्य यह था कि विश्वविद्यालयों को शिक्षकों की नियुक्ति, पदोन्नति, छात्रों के प्रवेश, पाठ्यक्रम निर्धारण तथा परीक्षाओं के लिए स्वतन्त्रता प्रदान की जाये। जिससे वे उच्च शिक्षा के स्तर को ऊँचा उठाने में सक्षम हो। अध्यापक षिक्षा एक निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया होने के कारण उसे लचीलापन, मानवीय एवं अन्तः अनुषासन की आवष्यकता है। मूलरूप से तीन प्रमुख तत्व अध्यापक षिक्षा का केन्द्र निर्माण करेंगे।

1. भावी अध्यापकों को इस तत्व से परिचित कराना चाहिए कि अध्यापक व्यवहार कैसा एवं क्यों हो ? इन प्रष्नों उत्तर मनोविज्ञान, प्रषिक्षण शास्त्र एवं समाजषास्त्र के आधार पर दिये जाये।

2. भावी अध्यापक को सामाजिक परिवर्तन करने का घटक विद्यार्थियों का पथ प्रदर्षक व मार्गदर्षक होना चाहिए ?

3. भावी अध्यापक को अपने विषय और अपने विषय में षिक्षण विधि का विषेषज्ञ होना चाहिए ?

अध्ययन के उद्देश्य –

शोध पत्र में निम्नलिखित उद्देश्यों हेतु कार्य किया गया है :

1. मगध मण्डल के शासकीय एवं अशासकीय प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानो में अध्ययनरत् छात्राध्यापक की शिक्षण संतुष्टि तुलनात्मक अध्ययन करना।

2. मगध मण्डल के प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानो में अध्ययनरत् छात्राध्यापक एवं छात्राध्यापिकाओं की शिक्षण संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पनाएं :– उपर्युक्त उद्देश्यों के लिए निम्नलिखित परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया है। :–

1. मगध मण्डल के शासकीय एवं अशासकीय प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानो में अध्ययनरत् छात्राध्यापक की शिक्षण संतुष्टि में विद्यालय भिन्नता के आधार कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।

2. मगध मण्डल के प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानो में अध्ययनरत् छात्राध्यापक एवं छात्राध्यापिकाओं की शिक्षण संतुष्टि पर लिंग भिन्नता के आधार कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।

उपकरण :– परिकल्पनाओं की जांच के लिये इस शोध पत्र में निम्न परिक्षण का प्रयोग किया गया है। छात्राध्यापक की शिक्षण संतुष्टि मापनी के लिए :– स्वनिर्मित मापनी का प्रयोग किया गया है।

न्यादर्श :– इस पत्र हेतु यादृच्छिक न्यादर्श का प्रयोग करते हुये मगध मण्डल के प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानो में अध्ययनरत् 140 छात्राध्यापको न्यादर्श के रुप में लिया गया है।

आंकडों से प्राप्त परिणाम :–

परिकल्पना संख्या 1 – मगध मण्डल के शासकीय एवं अशासकीय प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानो में अध्ययनरत् छात्राध्यापक की शिक्षण संतुष्टि में विद्यालय भिन्नता के आधार कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।

मगध मण्डल के शासकीय एवं अशासकीय प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानो में अध्ययनरत् छात्राध्यापक की शिक्षण संतुष्टि के मध्यमान एवं मानक विचलन को प्रर्दशित करने वाली तालिका

क्र.सं.	समूह / विद्यालय	कुल संख्या छत्र140	मध्यमान	मानक विचलन	'टी' मूल्य
1.	शासकीय प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान	70			
2.	अशासकीय प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान	70			

स्वतंत्रता के अंष 138 हेतु आवष्यक 'टी' का तालिका मान

0.05—1.98 **0.01—2.63**

तालिका से स्पष्ट है कि प्रदत्तों की गणना से प्राप्त किया गया 'टी' मान 1.18 है जो कि 0.01 व 0.05 विष्वास स्तर पर आवष्यक तालिका मान 1.98 / 2.63 से कम है। अतः शून्य परिकल्पना दर्षाती है कि मगध मण्डल के शासकीय एवं अशासकीय प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानो में अध्ययनरत् छात्राध्यापक की शिक्षण संतुष्टि में विद्यालय भिन्नता के आधार पर कोई सार्थक अंतर नहीं होता है। अतः यह परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

सरकारी एवं निजी विद्यालयों की षिक्षिकाओं के पारिवारिक समायोजन के आंकड़ों के मध्यमान को प्रदर्शित करने वाला आरेख

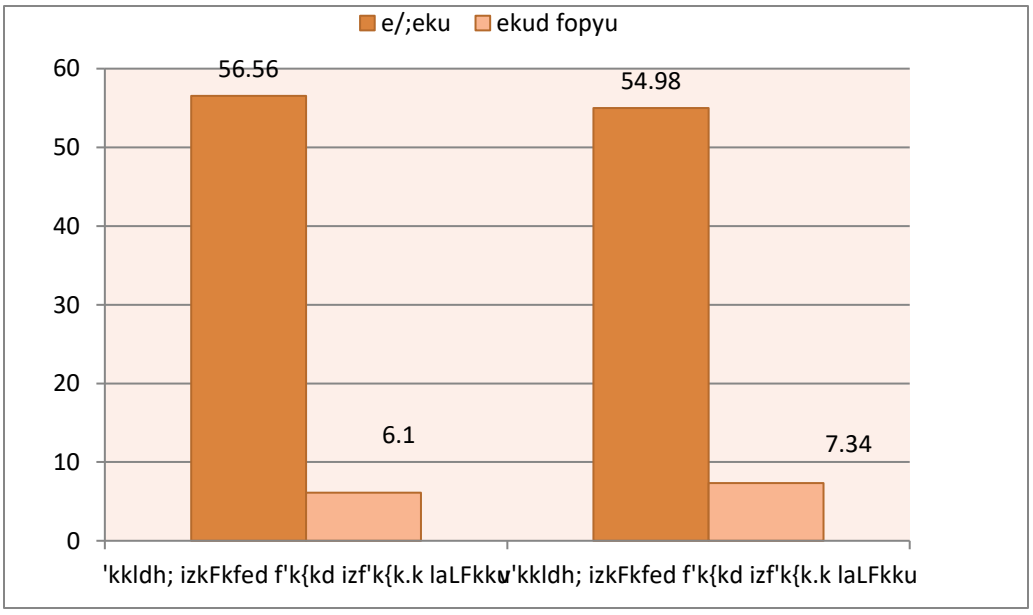

परिकल्पना संख्या 2. मगध मण्डल के प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानो में अध्ययनरत् छात्राध्यापक एवं छात्राध्यापिकाओं की शिक्षण संतुष्टि पर लिंग भिन्नता के आधार कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।

मण्डल के प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानो में अध्ययनरत् छात्राध्यापक एवं छात्राध्यापिकाओं की शिक्षण संतुष्टि के मध्यमान एवं मानक विचलन को प्रर्दशित करने वाली तालिका

क्र.सं.	समूह/विद्यालय	कुल संख्या छत्र140	मध्यमान	मानक विचलन	'टी' मूल्य
1.	प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानो में अध्ययनरत् छात्राध्यापक	70			
2.	प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानो में अध्ययनरत् छात्राध्यापिकाएं	70			

स्वतंत्रता के अंष 138 हेतु आवष्यक 'टी' का तालिका मान

0.05—1.98 **0.01—2.63**

तालिका से स्पष्ट है कि प्रदत्तों की गणना से प्राप्त किया गया 'टी' मान 1.18 है जो कि 0.01 व 0.05 विष्वास स्तर पर आवष्यक तालिका मान 1.98/2.63 से कम है। अतः शून्य परिकल्पना दर्षाती है कि मगध मण्डल के प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानो में अध्ययनरत् छात्राध्यापक एवं **छात्राध्यापिकाओं** की शिक्षण संतुष्टि में लिंग भिन्नता के आधार पर कोई सार्थक अंतर नहीं होता है। अतः यह परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

मण्डल के प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानो में अध्ययनरत् छात्राध्यापक एवं छात्राध्यापिकाओं की शिक्षण संतुष्टि के मध्यमान को प्रर्दशित करने वाला आरेख

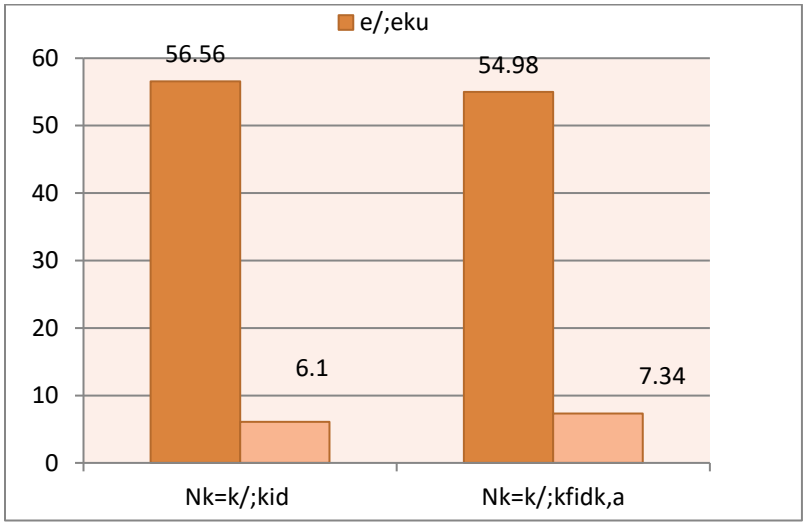

निष्कर्ष :–

शैक्षिक निहितार्थ :–

शिक्षा कार्य को समस्त कार्यो में पवित्र, पथ–प्रदर्शक व परम आवश्यक माना गया है। शिक्षक की प्रक्रिया निश्चित रूप से अध्यापक शिक्षा पर निर्भर है क्योंकि अध्यापक शिक्षा के माध्यम से भावी अध्यापकगण विभिन्न दक्षताओं से परिचित होते है। साथ ही वे विभिन्न कौशलों में दक्षताओं से परिचित होते है। साथ ही ये विभिन्न कौशलों में दक्षता प्राप्त करते हुए शिक्षण व्यवहारों को ग्रहण करने में सक्षम हो पाते है। अध्यापकों द्वारा प्राप्त किए हुए दक्षता को विद्यार्थी के लिए वैयक्तिक के साथ–साथ समाज के लिए तथा मर्यादा की तुलना जीवन मूल्यों के संदर्भ में किया जाता है। आजकल के परिप्रेक्ष्य में समाज के लिए जितने अध्यापकों की आवश्यकता है, दक्षतायुक्त अध्यापको की कमी है, यदि प्रशिक्षित अध्यापक उपलब्ध है तो विद्यार्थी, समाज व राष्ट्र का परिदृश्य व मूल्यांकन करने पर खरे नहीं उतर पायेंगे।

आधुनिक समय में शिक्षण के अनतर्गत सम्प्रेषण व्यवहारों का प्रयोग समान रूप से किया जा रहा है इसका कारण यह है कि जटिलताएँ व आवश्यकताएँ बढ़ रही है और तकनीकी ज्ञान व निपुणता को अधिक बढ़ावा दिया जा रहा है। शिक्षण संस्थान के सभी स्तर पर विद्यार्थियों की संख्या में वृद्धि होने के कारण अध्यापक के कार्य क्षेत्र का संकुचन होता जा रहा है। आज के परिपेक्ष्य में एक अध्यापक को उसके विषय में दक्षता प्राप्त करने को प्रर्याप्त माना जा रहा है। शिक्षण में एक ही शिक्षण विधि या उपागम का प्रयोग सूक्ष्म शिक्षण के माध्यम से प्रशिक्षण आज एक ही कक्षा के विभिन्न वर्गो के लिए अनुपयुक्त माना जा रहा है वस्तुतः आज शिक्षक प्रशिक्षण के स्थान पर प्रायः शिक्षक शिक्षा शब्द का प्रयोग सर्वमान्य रूप से किया जा रहा है।

प्रशिक्षण के अन्तर्गत ज्ञान के साथ ही व्यवहार, कौशल तथा अभिवृति में परिवर्तन करने के लिए प्रयास किया जाता हैं जबकि शिक्षा के माध्यम से परिवर्तन के साथ ही सामाजिक एवं सामुदायिक दृष्टि से उपयोगी गुणगत एवं चरित्रगत परिवर्तन किया जाता है। प्रशिक्षण के माध्यम से किसी अधिगमकर्ता को किसी कार्य या प्रक्रम के बारे में कुशल बनाया जाता है जिससे कार्य दक्षता में वृद्धि सम्भव हो सके एवं दक्षता प्रापित सुनिश्चित की जा सके। इस परिप्रेक्ष्य में शिक्षकों को प्रशिक्षित करने का तात्पर्य उन्हें शिक्षण कौशलों या विशिष्ट शिक्षण व्यवसाय के प्रति उनमें सकारात्मक तथा स्वस्थ अभिवृति या संवेगात्मक मानसिक अवस्था या स्थिति उत्पन्न करना तथा सैद्धान्तिक पृष्ठिभूमि के बारे में उन्हें जानकारी प्रदान करना है। चूंकि शिक्षक राष्ट्र निर्माता होता है क्योंकि भावी पीढ़ी के सर्वांगीण विकास कराने हेतु तत्पर होता है इसलिए शिक्षक को शिक्षित करते समय ज्ञान के साथ–साथ उनमें उन नैतिक मूल्यों को भी महत्व देना आवश्यक हो जाता है जो केवल अध्यापन व्यवसाय से ही सम्बन्धित न होकर सम्पूर्ण जीवन क्षेत्र से सम्बन्धित हो। शिक्षा समाजोपयोगी एवं मानवतावादी व्यक्तित्व के निर्माण पर बल देती है जबकि प्रशिक्षण में व्यवहार कुशल अध्यापक के निर्माण को आवश्यक माना जाता है। शिक्षा में जीवन मूल्य संस्कृति तथा परम्पराओं के परिप्रेक्ष्य में ही योग्यताओं का मूल्यांकन करने का प्रयत्न किया जाता है।

कम समय में अधिक और गुणात्मक उत्पाद निर्माण के लिए प्रशिक्षण जरूरी होता है। लेकिन उनमें मानवीय संवेदनाओं को स्थान प्रायः नही दिया करने हेतु मनोचिकित्सक को पहले प्रशिक्षण लेना होता है क्योंकि वे अभ्यास मनोरोगियों के साथ नही कर सकते क्योंकि मनोरोगियों के निदान व उपचार के समय उपयुक्तता का आंकलन करते समय अन्य पहलुओं को भी ध्यान रखा जाता है।

इसलिए आधुनिक समयानुसार अध्यापक का मात्र प्रशिक्षण होने से काम नही चल सकता है बल्कि उन्हें शिक्षित होने के लिए प्रयास करना चाहिए इसलिए शिक्षक प्रशिक्षण के स्थान पर शिक्षक शिक्षा पद का प्रयोग करना आवश्यक माना जा रहा है। शिक्षण मात्र सूचना प्रदान करना नहीं है और न ही तथ्यों को सम्प्रषित करना है। चूंकि अध्यापक एक मानव अभियांत्रिक के रूप में कार्य करता है, अतः उनके लिए अपरिहार्य हो जाती है। इसलिए शिक्षक प्रशिक्षण के स्थान पर शिक्षक शिक्षा ग्रहण करना आधुनिक अध्यापक के लिए अनिवार्य बन गया है।

Anusandhanvallari
Vol 2024, No.1
June 2024
ISSN 2229-3388

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

- च्वींनतलएकीएच्नतप ;2009द्धएडमै.052 च्लबीवसवहल वि स्मंतदपदह ।दक जमंबीपदह एछमू क्मीसपरूच्तपदज च्बाण
- पाण्डेय ; बैकुण्ठ ;2004 ; प्राथमिक कक्षाओं में गतिविधियों आधारित शिक्षण; नई दिल्ली ; प्रकाशन संस्थान
- रायजादा,बी.एस(1997),षैक्षिक अनुसंधान के आवष्यक तत्व,जयपुरः राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी।
- व्यास,षर्मा(2010) ,अधिगम षिक्षण और विकास के मनोसामाजिक आधार,जयपुर :राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी ।
- ब्लूमिंग(2000)एकाउन्टेबिलिटी एण्ड टीचर इफेक्टिवनेस ऑर फ्रीडम टीचर्स दा सोसाइटी फॉर रिसर्च इन हॉयर एजुकेशन,
- ब्लाइंग 1982 डोनाल्ड एकाउन्टेबिलिटी फार फ्रीडम फॉर टीचर्स दा सोसाइटी फॉर रिसर्च इन हायर एजुकेशन एण्ड यूनिवर्सिटी ऑफ गोलफोर्ड सुरे,
- एफ.एन.करलिंगर (2000) फाउडेशनल आफ बिहेवियरल रिसर्च हाल्ट रिनी हर्ट व विल्सन , न्यूयार्क